हिन्दी भाषा की पुस्तकों द्वारा मूल्यों का शिक्षण

शोधपत्र-शिक्षा

*श्रीमती प्रवेश लता **रामानंद शर्मा

''चारों ओर अमंगल फैला,
त्राही–त्राही होती है ।
नैतिकता को छोड़ मनुजता
बार–बार रोती है ।
नैतिक शिक्षा दो बच्चों को,
धर्म–कर्म सिखलाओ ।
अनुशासन से बद्ध करो,
सदाचरण बतलाओ ।।''

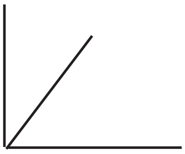

आज चारों तरपफ हिंसा, अराजकता और भ्रष्टाचार की भयानक स्थिति फैली हुई है। आजकल ऐसा कोई भी दिन नहीं गुजरता जब समाचार पत्रों में इस प्रकार की खबरें मुख्य पृष्ठ पर न दिखाई देती हो, वर्तमान समय में अपराधें का ग्राफ बिल्कुल एक सीढ़ी की भांति बढ़ रहा है। आज जीवन के सभी क्षेत्रों में नैतिक मूल्यों की भारी कमी तथा वर्तमान समय में मूल्यों के संकट के कारण सम्पूर्ण विश्व में मूल्यपरक शिक्षा पर बल देने पर जोर दिया जा रहा है । हमारे विद्वानों तथा बुद्विजीवी वर्ग के समझ में यह बात पूर्ण रूप से आ गई है कि मूल्यों की पुन प्रतिष्ठा के अभाव में शिक्षा में गुणात्मक सुधर करना कल्पना मात्रा है। आज बढ़ते भौतिकवाद से उत्पन्न आपाधपी के फलस्वरूप हमारे मूल्यों का ह्रास होता जा रहा है और समाज में सरोकारहीनता हमसे क्या मतलब, हमें इससे क्या लेना देना आदि मनोवृत्तियॉं प्रबल रूप धरण कर रही हैं । आज का व्यक्ति सही गलत का विचार किए बिना किसी भी साध्न से अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील है । आज मुख्य खतरा यह हो रहा है कि चाहे मानव जाति समाप्त हो न हो, मनवीय तत्व अवश्य लुप्त हो जाएगा ।

भौतिकता की आपाधपी में जीवन के शाश्वत मूल्य कही खो गए है, इस विचारधरा ने हमारी बौद्विक शक्ति बढ़ाई है वही उसने अध्यात्मिकता को हमसे छीन लिया है। परिणामस्वरूप हम अंधधुंध पाश्चात्य सभ्यता के प्रति आकृर्षित होते जा रहे हैं। डॉ. राधकृष्णन ने कहा है– ''आधुनिक मानव ने पक्षी की तरह आकाश में उड़ना सीख लिया है। सागर में मछली की तरह तैरना सीख लिया है लेकिन पृथ्वी पर मनुष्य की तरह चलना भूल गया है।''

मूल्यों को स्थाई रखने में भाषा अध्यापक का बहुत ज्यादा योगदान दर्शाया गया है, इसी कारण से हमारे 'हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड' ने हिन्दी भाषा की पुस्तकों में छात्रों के मूल्य को बढ़ाने हेतु बहुत सी बातों को सम्मिलित किया है क्योंकि Teen 'हम' वह कच्ची आयु होती है, जिसमें कि छात्रों को जो भी कुछ बताया जाता है वह उसे आसानी पूर्वक ग्रहण कर लेते हैं तथा जीवन भर उसे लागू करना चाहते हैं । इसके कुछ निम्नलिखित उदाहरण है जैसे –

1.गुरू की महत्ता :
गुरू कुम्हार सिष कुंभ,
गढि–गढि काढै खोट।
भीतर हाथ सहार दे,
बाहर बाहै चोट।।[2] –कबीरदास

अर्थात् कबीरदास जी कहते हैं कि गुरू ठीक उस कुम्हार के समान होता है जो घड़े को तो बाहर से पीटता हुआ नजर आता है, लेकिन अंदर हाथ का सहारा देता है, गुरू भी चाहे बाहर से शिष्य को कुछ कहे लेकिन वह अन्तःकरण में शिष्य के प्रति प्रेम व सहानुभूति रखता है।

2. परनिंदा न करना–''तिनका कबहुँ न निंदिए, जो पॉयन तर होय। कबहुँ उड़ि ऑंखिन परे, पीर घनेरी होय।।'' [3] – कबीरदास

अर्थात् हमें कभी भी किसी छोटी से छोटी वस्तु की भी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए क्योंकि उसका भी अपने आप में बहुत महत्व होता है जैसे–पैरों में रहने वाले तिकने का ज्यादा अपमान नहीं करना चाहिए। क्या पता कब वह ऑखों में पहुॅंचकर बहुत अध्कि पीड़ा पहुॅंचा दे।

3. व्यवहारिक ज्ञान की महत्ता: 'वैद्यराय जीवक' [4] में जीवक बहुत ही सुविध तथा आसानी से अपने रोगियों का ईलाज करता है जब जीवक को सेठ का ईलाज करना था तो सेठ को 21 दिन के आराम की आवश्यकता थी, लेकिन जीवक जान चुका था कि सेठ धैर्यवान नहीं है, इसलिए उन्होनें 21 महीनें आराम की बात कहकर उसका ईलाज करवा दिया।

4. देश प्रेम की भावना–''बुंदेले हरवोलो के मुॅंह

* –** ग्रीन मिडोज कॉलेज ऑफ एजुकेशन चरखी, तहसील चरखी दादरी (भिवानी)

हमने सुनी कहानी थी । खूब लड़ी मर्दानी वह तो झॉसी वाली रानी थी ।।''[5] —सुभद्रा कुमारा चौहान

अर्थात् बुंदेलखंड के लोक नायकों से हमने उनकी जुबान से सुना था कि सन् 1857 की क्रान्ति में रानी लक्ष्मीबाई अंग्रेजों से टक्कर लेते हुए वीरगति को प्राप्त हो गई वो एक साधरण महिला नहीं बल्कि एक बहादुर वीरांगना थी ।

6.स्वाभिमान युक्त जीवनः–''सिंही की गोद में छीनता है शिशु कौन ? मौन भी क्या रहती वह रहते प्राण? रे अजान, एक मेषमाता ही रहती है निर्निमेष

दुर्बल वह–छिनती संतान पद जन्म पर असने अभिशप्त तप्त आँसू बहाती है ।''[6] —सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

अर्थात् जब तक शेरनी जीवित रहती हे, उसकी संतान को उससे कोई भी नहीं छीन सकता क्योंकि वह अपनी संतान की अच्छे ढ़ंग से रक्षा करती है, लेकिन जब एक भेड़ के बच्चे को उससे छीना जाता है तो इसके लिए सिपर्फ वह आंसू ही बहाती है अतः व्यक्ति को स्वाभिमानी पूर्ण जीवन यापन करना चाहिए ।

7. उचित ध्ैर्य, इच्छाशक्ति युक्त जीवनः– 'अपराजित'[7] कहानी में लेखिका शिवानी ने दर्शाया है कि किस प्रकार से डॉ. चन्द्रा अपंग महिला होते हुए भी सिपर्फ 25 वर्ष की आयु में पी.एच.डी. जैसी सम्मानित उपलब्ध्ि प्राप्त कर लेती है वह भी उस विषय पर जिस पर की स्वस्थ मानव ने भी शोध् नहीं किया था।

8. उच्च समाज पर व्यंग्यः 'दुध का दाम'[8] कहानी मुंशी प्रेमचन्द द्वारा लिखित ने स्पष्ट किया है कि किस प्रकार से भुंगी अपना दूध् पिलाकर महेशनाथ के लड़के का पालन पोषण करती है तथा अपने स्वयं के लड़के की देखभाल नहीं करती पिफर भी वे भुंगी के लड़की को अछूत समझते हैं । इससे स्पष्ट है कि जिस प्रकार अपना रक्त पिलाने वाली औरत के पुत्रा के प्रति भी लोगों में संवेदना नहीं रहती है ।

9. आदर्श भारतीय नारी :

''जहां तुम्हारे चरण, वहीं पर
पद–रज बनी पड़ी हूँ मैं ।
मेरा निश्चित मार्ग यही है,
ध्रुव सी अटल अड़ी हूँ मैं ।।''[9]
—सुभद्रा कुमारा चौहान

जब प्रियतम अपनी पत्नी से अलग होने की बात कहता है तब वह कहती है कि मेरा तो निश्चित मार्ग वही पर है जहां पर तुम्हारे पॉव रखे जायेगें मैं तो तुम्हारे पैरों की ध्ूल के समान हूँ तथा तुम्हारे साथ रहना ही मेरा निश्चित मार्ग है ।

10.दौलत तुच्छ होती है– ''दौलत पाय न कीजिए, सपने में अभिमान, चंचल जल दिन चारिको, ठाउफॅ न रहत निदान ।।''[10] ––गिरिधर

अर्थात् ध्न–दौलत पाकर व्यक्ति का किसी भी प्रकार का अभिमान नहीं करना चाहिए । यह तो चार दिन किसी के पास भी रूक सकती है जिस प्रकार पानी बहता रहता है, ठीक उसी प्रकार ध्न–दौलत भी एक स्थान पर नहीं रूकती। इस प्रकार से हिन्दी भाषा की पुस्तकों में मूल्यों के उफपर कापफी जोर डाला गया है, ताकि इस बातों को जीवन में आधर मानकर बच्चे उचित प्रकार से शिक्षित हो सके तथा अनुशासनपूर्वक जीवन व्यतीत कर सके क्योंकि अनुशासन से ही व्यक्ति का सर्वांगीण विकास होता है कहा भी गया है कि

''अनुशासन है देश की जान,
अनुशासन है जाति का प्राण ।
अनुशासन में रहने से ही,
देश जाति का हो कल्याण ।।''

आज सभी लोग इस बात को लेकर चिंतित है कि मूल्यों का ह्रास हो रहा है । इसके लिए मुख्य रूप से भौतिकवादिता का मुख्य समझा जा रहा है। इसके लिए भाषा अध्यापक कोशिश करके निर्धरित पाठ्यक्रम की सहायता से कापफी हद तक मूल्यों के शिक्षण को बढ़ाया जा सकता है। इससे छात्राों में नैतिक, अध्यात्मिकता, भावनात्मकता, आदर्शवादिता, यथार्थवादिता, सांमजस्य की भावनाओं आदि का विकास किया जा सकता है ।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. Teen Age - Edu. Psy. Wri J.S. Walia Teen age अर्थात् 13 से 19 वर्ष की अवस्था। 2. भारती भाग–।। कक्षा सातवीं, हरियाणा वि.शिक्षा बोर्ड 'दोहा एकादश' कवि कबीरदास । 3. भारती भाग–।। कक्षा सातवीं, हरियाणा वि.शिक्षा बोर्ड 'दोहा एकादश' कवि कबीरदास । 4. भारती भाग–।। कक्षा सातवीं, हरियाणा वि.शिक्षा बोर्ड 'वेद्यराज जीवक' । 5. भारती भाग–। कक्षा छठी, हरियाणा वि. शिक्षा बोर्ड 'झांसी की रानी' कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान। 6. वासन्ती भाग–।। कक्षा +2, हरियाणा वि. शिक्षा बोर्ड 'जागों पिफर एक बार' कवि 'निराला' । 7. भारती भाग–।।। कक्षा आठवीं, हरियाणा वि.शिक्षा बोर्ड 'अपराजिता कहानी' लेखिका शिवानी । 8. आरोह भाग–। कक्षा +1, हरियाणा वि.शिक्षा बोर्ड 'दूध् का दाम' लेखक मुंशी प्रेमचन्द । 9. वासन्ती भाग–।। कक्षा +2, हरियाणा वि. शिक्षा बोर्ड 'स्मृतियॉ' कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान । 10. भारती भाग–।।। कक्षा आठवीं, हरियाणा वि.शिक्षा बोर्ड 'गिरध्र की कुँडलियॉ' कवि गिरध्र ।